पेस्टालॉजी के शैक्षिक दर्शन का सारांश
(Summary of Educational Philosophy of Pestalozzi)

(1) अन्तर्ज्ञान ही शिक्षा का आधार है।

(2) ज्ञान में मनोवैज्ञानिक क्रम होना चाहिए।

(3) शिक्षा का उद्देश्य सच्चे अर्थों में बच्चे का विकास होना चाहिए न कि व्यर्थ में सिद्धान्तों का।

(4) किसी भी तथ्य को भलीभाँति ग्रहण करने के लिए बालक को पर्याप्त समय देना चाहिए।

(5) शिक्षक को बालक के व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए।

(6) छात्र और शिक्षक के सम्बन्धों का आधार प्रेम होना चाहिए।

(7) शिक्षा का उद्देश्य बालक की प्राकृतिक शक्ति के विकास के लिए अवसर प्रदान करना है।

(8) शिक्षा मानव के सम्पूर्ण शक्तियों का ~~क~~ प्राकृतिक, प्रगतिशील तथा सामन्जस्यपूर्ण विकास है।

(9) पेस्टालॉजी ने जनसामान्य की शिक्षा पर विशेष बल दिया।

(10) शिक्षा मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।

(11) ज्ञान का क्रम सरल से जटिल की ओर होना चाहिए।

(12) शिक्षा द्वारा समाज की गरीबी, कष्ट और दुःखों को दूर किया जा सकता है।

(13) रटने के स्थान पर बालक को अनुभव के आधार पर स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(14) पाठ्यक्रम ऐसा हो जिससे बालक का स्वाभाविक और चहुँमुखी विकास हो।

(15) पेस्टालाजी ने सर्वप्रथम शिक्षण एवं शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग किया।

(16) ~~प्रथम~~ सबसे पहले पेस्टालॉजी ने ही शिक्षण प्रशिक्षण का स्कूल खोला।

Scanned with CamScanner

(17) बच्चों को विद्यालय में भी घर जैसी स्वतंत्रता होनी चाहिए अर्थात् घर जैसा प्यार मिलना चाहिए।

(18) स्कूल प्यार का घर है।

(19) शिक्षा से सामाजिक कुरीतियाँ दूर की जा सकती हैं।

(20) शिक्षा का उद्देश्य सभी स्वाभाविक शक्तियों का अनुरूप विकास है। शिक्षा व्यावहारिक, नैतिक तथा धार्मिक होनी चाहिए।

(21) शिक्षा का आयोजन बालक का स्वभाव, इच्छा तथा शक्ति के अनुसार मनोवैज्ञानिक ढंग पर होना चाहिए।

(22) सीखने के समय निर्णय तथा आलोचना नहीं करनी चाहिए।

(23) एक बात समझा देने के बाद कुछ रुक जाना चाहिए, जिससे बालक अच्छी-भाँति सब कुछ समझ ले। जब तक पाठ का ठीक से बोध न हो जाय तब तक आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

(24) जिस प्रकार विकास का एक क्रम होता है उसी प्रकार अध्यापन का भी एक क्रम होना चाहिए। शिक्षा भाषण अथवा उपदेश के रूप में नहीं देना चाहिए।

(25) निरीक्षण शिक्षा का आधार है। इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है

(26) अनुशासन प्रेम द्वारा ही स्थापित एवं नियन्त्रित होना चाहिए।

(27) पेस्टालॉजी बालक को दैवीय कृति मानते थे।

(28) उसे तेरह वर्ष के बच्चों की शिक्षा की बात लिखा गया है। अर्थात इनका विचार प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

(29) विद्यालय में बच्चों को 12 घण्टे तक रखा जाना था।

(30) पेस्टालॉजी जन शिक्षा के समर्थक थे।

(31) वे बालकों को व्यावसायिक शिक्षा देकर स्वावलम्बी बनाना चाहते थे।

(32) इनका मानना था कि धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा घर विद्यालय दोनों जगह होनी चाहिए लेकिन आचरण द्वारा, उपदेश द्वारा नहीं।

Scanned with CamScanner

(33) शिक्षक को बच्चों का मनोविज्ञान और सीखने-सिखाने के मनोविज्ञान का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।

(34) बालक को उसके मूल प्रवृत्तियों के अनुसार शिक्षा देना चाहिए ताकि उसका स्वाभाविक रूप से शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास हो सके।

(35) पेस्टालॉजी ने आन्शवांग (Anschauung) विधि का खोज किया अर्थात जब बालक अपने अनुभवों या स्वानुभूति द्वारा सीखता है उसे ~~आन्शवांग~~ आन्शवांग विधि कहते हैं।

(36) पेस्टालॉजी प्रथम शिक्षाशास्त्री था जिसने आवयविक शिक्षा (Organic Education) की बात कही।

(37) पेस्टालॉजी ने ही अभ्यास एवं आवृत्ति विधि का विकास किया।

(38) शिक्षा के उद्देश्य में पेस्टालॉजी ने प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों पक्षों को रखा।

(39) पेस्टालॉजी ने पाठ्यचर्या में भाषा, अंकगणित, भूगोल, सामान्य व्यवसाय (खेती, कताई-बुनाई इत्यादि), धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को रखा।

(40) पाठ्यचर्या बच्चों के क्षमतानुसार तथा क्रियाशीलता पर आधारित होनी चाहिए।

(41) पेस्टालॉजी को रूसो के शैक्षिक विचारों को विकसित करने एवं मूर्त रूप देने के लिए जाना जाता है।

(42) बालकों को अपने इन्द्रियों द्वारा सीखने तथा स्वयं करके स्वयं के अनुभवों से सीखने पर बल दिया गया।

(43) उनका मानना था कि शिक्षा समाज सुधार का मूल आधार है।

Scanned with CamScanner